''सन्तुष्टमणियों का भाग्य, दिल का गीत पाना था सो पा लिया''

आज बच्चों के याद और प्यार ने बापदादा को इस साकारी दुनिया में अपनी आकर्षण से बुला लिया। बापदादा भी बच्चों को साकारी दुनिया में साकार रूप में देख रहे हैं। चारों ओर के बच्चे भी बाप को देख रहे हैं और बाप भी साकार स्वरूप में देख रहे हैं। और दिल में चारों ओर के बच्चों प्रति वाह! बच्चे, कल्प-कल्प के पात्र बच्चों को देख खुश हो रहे हैं। हर एक बच्चे के भाग्य और प्राप्ति को देख मिलन मना रहे हैं। दिल ही दिल में हर बच्चे के भाग्य को देख हर्षित हो रहे हैं। हर बच्चे के चेहरे में चमकता हुआ भाग्य दिखाई दे रहा है। मस्तक में लाइट की प्राप्ति चमक रही है। हाथों में ज्ञान का भण्डार दिखाई दे रहा है। दिल में दिलाराम दिखाई दे रहा है। पांव में कदम में पदम दिखाई दे रहा है। ऐसा भाग्य देख हर एक का चेहरा चमक से चमक रहा है। सभी चारों ओर के बच्चे सन्तुष्ट स्वरूप दिखाई दे रहे हैं। ऐसे चेहरे चमकते हुए देख अन्य आत्मायें भी सोचती हैं इन्हों को क्या मिला है! तो आप क्या जवाब देंगे? जो पाना था वो पा लिया...। सब सन्तुष्ट मणियों के रूप में चमक रहे हैं। ऐसी अपनी मूर्त को आप भी देख रहे हो ना! बापदादा भी ऐसी सन्तुष्टमणि आत्माओं को देख क्या गीत गाते हैं! वाह मेरे सन्तुष्ट आत्मायें वाह!

तो आज सिर्फ बच्चों का दिल का उल्हना पूर्ण करने के लिए आये हैं। आप सभी का भी उल्हना तो पूरा हुआ ना! आगे जैसे ड्रामा निमित्त बनायेगा ऐसे मिलते रहेंगे। आज इतना ही ड्रामा में मिलन है।

सभी बच्चों ने बहुत अच्छी रथ की सेवा की है। बापदादा सभी सेवा के निमित्त आत्माओं को विशेष मुबारक दे रहे हैं। अभी सिर्फ बच्चों का मिलने का उल्हना पूरा करने आये हैं। तो सभी ठीक है! ठीक हैं सभी हाथ उठाओ। रथ की भी सेवा करने वालों को दिल की मुबारक है। चाहे कहाँ भी रथ को रहना पड़ा लेकिन बापदादा ने देखा गुजरात भी कम नहीं है। कहाँ हैं गुजरात के! तो बापदादा और साथ में हमारे निमित्त बने हुए पाण्डव निर्वैर बच्चे ने भी बहुत साथ दिया। आओ। (सरला दीदी को) बहुत अच्छा किया। सभी दादियों को निमित्त बन सम्भालने के लिए आपको और आपके साथियों को बहुत-बहुत मुबारक हो।

(दादी जानकी के लिए) अच्छा सुना, सब ठीक हो ही जाना है।

दादी जानकी से:- सभी ने मिलके अच्छा पार्ट बजाया है। दादी की आवाज भी आ रही है।

आज सिर्फ मिलने के लिए ही आये हैं। अभी आते रहेंगे और मिलते रहेंगे। अच्छा।

तीनों बड़े भाईयों से:- अभी बापदादा कमाल देखने चाहते हैं, कौन सी कमाल देखने चाहते हैं? परिवार की आप तीनों में बहुत उम्मीदें हैं। अब बापदादा भी समझते हैं एक विचार कर अलग-अलग विचार तो होता ही है लेकिन विचार को मिलाना, वह अपने हाथ में होता है। तो बापदादा भी आप निमित्त बने हुए पाण्डवों में यह कमाल देखने चाहते हैं, विचार भिन्न-भिन्न होते हैं लेकिन मिलाना भी होता है। तो अभी तीनों यही कमाल दिखाना, तीन नहीं लेकिन तीनों एक हैं, बाकी तो सब अच्छे हैं, निमित्त होके चला रहे हैं। अच्छा।

देश विदेश के भाई बहिनों को बहुत-बहुत मुबारक हो, जो दोनों ही निमित्त दादियों की सम्भाल बहुत अच्छी की है, उसकी विशेष मुबारक है। और सभी तरफ के भाई बहिनों को विशेष दिल की याद प्यार दे रहे हैं और सदा दिल में समाये हुए हैं इसलिए सदा याद में रहना और एक दो को याद दिलाते रहना। अच्छा।

आज तो सिर्फ जो सभी को संकल्प था, मिलना है, मिलना है, मिलना है। वह शरीर के हिसाब से पूरा हुआ। अब आगे जो ड्रामा में होगा मिलते रहेंगे। बापदादा बच्चों से कभी भी दूर नहीं रह सकते। जैसे बच्चे बाप से दूर नहीं रह सकते

तो बाप भी बच्चों से दूर नहीं रह सकता। बापदादा सभी बच्चों को देख खुश है, मुबारक भी देते हैं कि अभी हर एक समझे कि मैं इस बेहद के कार्य के लिए सिर्फ स्वयं के लिए नहीं, स्वयं के साथ सेवा के भी निमित्त हूँ। अब ऐसी कमाल दिखाओ, दुनिया में हलचल और हलचल को अचल बनाने वाले निमित्त आप हो। वह अपना कार्य नहीं छोड़ते तो आप भी अपने को निमित्त समझ वह हलचल आप अचल, दोनों साथ-साथ पार्ट बजाओ। अच्छा। आज सिर्फ मिलने आये थे।

महाराष्ट्र, मुम्बई, आंध्रप्रदेश के भाई बहिनों की सेवा का टर्न है:- सभी हाथ हिला रहे हैं। हर एक ज़ोन को निमित्त बनने का पार्ट मिलता है। और बापदादा ने देखा कि हर एक ने पार्ट बजाया भी है और बजायेंगे भी।

चार विंग्स, एज्युकेशन, धार्मिक, साइंस-इंजीनियर, कल्चरल और कैड ग्रुप भी आया है। जो भी विंग्स वाले हैं, वह हर एक विंग एक दो से आगे है और अटेन्शन दे कार्य को आगे बढ़ा भी रहे हैं, उसकी मुबारक हो, मुबारक हो।

चारों ओर के बच्चों को अपना-अपना कार्य करने की मुबारक भी हो और आगे के लिए हर एक विंग या हर एक ज़ोन आगे से आगे बढ़ते रहेंगे, यह बापदादा की मुबारक है।

डबल विदेशी जो भी आये हैं, वह खड़े हो जाओ। बापदादा अभी डबल विदेशी नहीं कहते, डबल पुरुषार्थी। क्योंकि डबल पुरुषार्थी अभी भी चारों ओर बढ़ रहे हैं, छोटे छोटे स्थानों में भी अटेन्शन दे रहे हैं इसलिए सेवा की भी मुबारक है और डबल पुरुषार्थ की भी मुबारक है। अभी डबल विदेशी नहीं कहो, डबल तीव्र पुरुषार्थी कहो। ठीक है। डबल पुरुषार्थी, डबल माना तीव्र पुरुषार्थी। तो बापदादा को याद है कि डबल पुरुषार्थी कहाँ-कहाँ से आये हैं, लेकिन सबसे दूर कौन है? सबसे दूर कौन हैं? अमेरिका वाले। वह भी इस दुनिया के हैं। लेकिन बापदादा कहाँ से आये हैं? बच्चों ने कहा और बाप हाज़िर। चाहे शरीर का कुछ भी हो लेकिन बच्चे, बच्चे हैं। बाप सदा जी हाज़िर हो जाते हैं। अच्छा, चारों ओर के बहुत-बहुत अपना अच्छा पार्ट बजाने वाले ऐसे बाप ने कहा, बच्चों ने किया, ऐसे बच्चे सदा बाप के दिल में रहते हैं। तो चारों ओर के ऐसे बच्चों को पदमगुणा यादप्यार। अच्छा।

(जानकी दादी को सिर में चोट लगी है) यह तो होता रहता है, इसकी कोई बात नहीं है। और ही सुन्दर हो गई हो। (दादी जानकी सिर ढके हुए हैं) दादी दादी कहती हो ना, तो दादी का रूप भी तो देखो। यह ठीक है? (हंसा बहन, प्रवीणा बहन से) थकती तो नहीं हो। अच्छा है। (हंसा बहन से) सेवा अच्छी कर रही हो। सेवा जो भी करते हैं ना, आप लोगों को देखके उन्हों को भी उमंग आता है इसीलिए उन्हों की मुबारक मिलती रहती है, जो निमित्त बनते हैं। डाक्टर्स को भी याद भेजना।

(ऐसे दोनों दादियों के साथ ही क्यों हुआ) यह उत्तर ड्रामा देगा। ड्रामा। अभी इसके आगे तो कोई नहीं बोल सकता। ड्रामा, ड्रामा ही है। (नीलू बहन उल्हना दे रही है) जो बोलना हो, बोलो।

अच्छा, सब बिन्दु रूप में स्थित हो जाओ।

ओम् शान्ति 27-11-12 मधुबन

दादी जानकी जी ने 27 नवम्बर 2012 को 7.30 बजे ओम् शान्ति भवन में क्लास कराया, डबल विदेशियों से अलग से मिली, टोली खिलाई उसके पश्चात हाल से बाहर आते समय अचानक गिर पड़ी, जिससे सिर में काफी चोट आई। दादी जी का वह विशेष क्लास आपके पास भेज रहे हैं:-

सवेरे अमृतवेले शान्तिवन डायमण्ड हॉल में थी, दिन में ज्ञानसरोवर में थी, शाम को यहाँ बैठी हूँ। कितना बड़ा भाग्य है!

राजयोग से सुख-शान्ति मिलती है, आप सबको मिली है ना? क्योंकि सब राजयोगी हो ना! हठयोगी तो नहीं हो? वैरागी भी नहीं संसार से, खुशी और शान्ति सब मिली है। अमृतवेला डायमण्ड हॉल में बहुत पॉवरफुल हुआ। यहाँ फिर तीन दिन की भट्टी का प्रोग्राम रखा है। और मेरे को रोज़ दो बारी गुल्जार दादी से मिलने का चांस मिलता है। सुबह और शाम को दोनों समय जाके मिलती हूँ। उस मिलन से क्या फायदा हुआ है, वो क्या बताऊं! वह तो सूरत मूरत बताती है। मैं ओम् शान्ति करती हूँ, दादी बाबा-बाबा करती है। कितना बारी माइक देते हैं दादी कुछ बोलो, कुछ बोलो... फिर भी एक दो शब्द ही बोलती है। तो मैंने अपने से क्वेश्चन पूछा, दादी से भी पूछा इतनी शान्ति, इतना प्रेम, इतनी खुशी जो दादी में है वह मेरे में और दादी में कोई अन्तर न रहे। यह कोई रीस नहीं है, हर एक का भाग्य अपना है पर बाबा की छुट्टी है, जितना जो पुरुषार्थ करे बाबा उसको साथ देता है। चलो, वो तो निमित्त रथ है, अव्यक्त पालना देने के अर्थ उसको बाबा ने ऐसा बनाके रखा है, उसने भी अपने आपको ऐसा बनाके रखा है। चेहरा ही ऐसा है। तो हम सबका भी ऐसा चेहरा हो, यह भावना है।

किसको अनुभव है भावना बहुत काम करती है? तो अगर आपके ऊपर भावना ने काम किया है, तो आप इतनी अच्छी ऊंची भावना रखो जो अनेकों को भावना से प्राप्ति हो। वन्डर है यह कैसे हुआ? भावना से। कुछ भी हो जाये, भावना जो है उसकी गहराई में जायेंगे तो आप भी अन्दर ही अन्दर अपने आपको बड़ा देखेंगे, कोई प्रॉब्लम नहीं है। मेरी भावना है, बाबा कैसे कर रहा है... वह देख रहे हैं। ड्रामा वन्डरफुल है, बना हुआ है।

हम ईश्वर के बच्चे हैं, सारा भक्तिमार्ग भावना के आधार पर चलता है। भावना से उन्हें साक्षात्कार होता है। किसी को धन मिलता है, पुत्र प्राप्ति होती है भावना से, पर हमको कोई धन पुत्र नहीं चाहिए। सच्चाई और प्रेम, खुशी और शक्ति चाहिए नहीं पर हमें मिली है। कैसे मिली है? भावना से मिली है, भगवान ने दी है, हमने ली है। भाग्य खुला है हमारा जो मधुबन बैठे हैं। दुनिया में जहाँ मनुष्य अकेला भी शान्त नहीं रह सकता है और यहाँ मधुबन बाबा के बेहद घर में सैकड़ों के बीच रह करके भी शान्त रहें, यह कमाल किसकी है? स्थान के वायुमण्डल की। कहने में आता है कि दीवारों को भी कान होते हैं माना वायुमण्डल दीवारों से बनता है। मन्दिर, मस्जिद, चर्च या गुरुद्वारें में जाओ तो... यह ब्रह्मा बाबा ने अपना यादगार स्थान ऐसा बनाया है। जैसा मेरा बाबा है, कितना मीठा है कितना प्यारा है...। सबसे न्यारा है। ऐसा मेरा बाबा हमको यहाँ खींचता है, बच्चे, जो बनना है अब बन लो। मैं बनाने वाला बैठा हूँ। अभी बनने का टाइम है। तुमको सिर्फ संकल्प करना है मुझे यह बनना है, पॉसिबुल है ना! क्योंकि वो बना रहा है इसलिए हमको कुछ मेहनत नहीं है, मुझे बनना है, बाबा बना रहा है। इसके लिए मैं कहती हूँ मुझे सिर्फ बाबा के सामने हाज़िर रहना है। बाबा के कई सारे बड़े अच्छे अच्छे बोल सारे दिन में याद आते हैं। जैसेकि बाबा सामने आके कहे बच्चे कोई हुक्म है? मैं मुस्कराने लगी। उस घड़ी मेरी कैसी स्थिति होगी, बस इसमें सदा ही हाँ जी किया है। बाप हमारे सामने सदा हाज़िर रहेगा, यह अनुभव आज दिन तक होता है। आपको अनुभव होता है? बाबा हमारे साथ है, जहाँ भगवान साथ है, वहाँ कोई बड़ी बात नहीं है। भगवान मेरे साथ है तो इतनी शक्ति, इतनी खुशी इतना अच्छा अनुभव होता है, कभी कदम कहाँ, कभी कहाँ क्योंकि अभी कदमों में पदमों की कमाई है। जहाँ कदम होगा वहाँ मेरी कमाई है। उसमें भी बाबा ने कहा था जब तबियत कैसी भी होती है, तो टाइम टू टाइम बैठ जाओ सो जाओ परन्तु एक बारी बाबा ने कहा बच्ची

''प्रकृति साथ देगी'' आज 22 साल हो गया। भगवानुवाच, हाज़िरी में फायदा है।

हरेक अन्दर देखे कितना त्याग वृत्ति, अनासक्त वृत्ति, उपराम वृत्ति रहती है? वृत्ति से दृष्टि का कनेक्शन है। त्याग वृत्ति के कारण जो बात छोड़ा है ना, उसके बाद फिर कभी बिल्कुल टच नहीं किया। देह, सम्बन्ध... कहाँ बुद्धि न जाये, उसमें भी कोई आसक्ति नहीं, उपराम वृत्ति उपर रहे। बाबा कर रहा है, करा रहा है भावना यह है, ऐसी स्थिति बनाने से देखो हमारे संग का रंग लगेगा, वह भी उपराम बन जायेगा। नहीं तो मेहनत से भी नहीं बनता है, हम तो बाबा के संग में रह करके अव्यक्ति पालना मिलने से हमारे लिये ऊपर रहना इज़ी है। जैसे हम यहाँ हैं ही नहीं रहते ही ऊपर हैं।

बाबा कहते देवताओं समान सदा हर्षित रहो, तो इसका रिहर्सल मैं कर रही थी कि देवताओं की मुस्कराहट भावना वाली है, कैसे खुश होते हैं वह खुशी मैं भी ले लूँ। वो देवता देते नहीं हैं, देवताओं को देखके खुश होते हैं। बाबा से लेके अभी हम देने वाले हैं, कितने हम भाग्यवान हैं। सुख-शान्ति दाता के बच्चे हैं, यह रिहर्सल अपने आपको जान करके करने से साधारण नहीं होते हैं, कभी कैसे, कभी कैसे यह नहीं हो सकता है। अन्दर ही अन्दर ब्राह्मण सो फरिश्ता, फरिश्ते को कोई माँ बाप नहीं होता है। फरिश्ता ईश्वर का डायरेक्ट बच्चा है पर थोड़े हैं। सूक्ष्म है, बहुत हल्का है, बहुत स्वच्छ है, बहुत सच्चाई है, इससे उड़ने की ताकत मिलती है औरों को। ऐसे उड़ने वाले फरिश्तों को देख मानते हैं, नुमाशाम के टाइम फरिश्ते ऊपर घूम रहे हैं। उसमें स्थिति मेरी ऐसी हो, ऊपर घूमती रहूँ, नीचे बैठी न रहूँ। ऐसी स्थिति है! यह रिहर्सल कर रहे हो? मेरी भावना है अच्छी स्थिति हो, अकेले है तो भी ऐसे, संगठन में भी हैं तो भी ऐसे। अच्छा। ओम् शान्ति।